
THE
LAST STEP

भाग दो

दहलीज़ 9

आख़िरी क़दम

बचपन में हम मानते हैं कि दुनिया वहीं ख़त्म होती है जहाँ हमारी नज़र ख़त्म होती है।

क़स्बे के पार की पहाड़ी।

मोहल्ले के पार की गली।

समंदर के पार का क्षितिज।

हम सोचते हैं कि सीमा उसी से मेल खाती है जो हम जानते हैं।

फिर हम बड़े होते हैं।

और हम खोजते हैं कि सबसे महत्वपूर्ण किनारे भौगोलिक नहीं होते।

वे आंतरिक होते हैं।

कई सालों तक मैंने अपने जीवन की कल्पना पहुँच में आने वाले इलाक़ों के एक समूह की तरह की।

एक नौकरी।

एक पद।

एक लक्ष्य।

एक परियोजना।

हर बार जब मैं किसी लक्ष्य तक पहुँचा, कोई और लक्ष्य सामने आ गया।

हर बार जब मैंने कोई सीमा पार की, मुझे एक नई सीमा मिली।

शुरू में यह रोमांचक था।

यह प्रगति का एक रूप लगता था।

फिर मैंने किसी बात पर ग़ौर करना शुरू किया।

मुझे बदलने वाले पड़ाव नहीं थे।

संक्रमण थे।

वह क्षण जब मैंने परिचित ज़मीन छोड़ी और किसी ऐसी चीज़ पर क़दम रखा जिस पर अब मेरा नियंत्रण नहीं था।

महत्वपूर्ण बातें वहीं हुईं।

हमेशा वहीं।

सुरक्षा में कभी नहीं।

हमेशा किनारे पर।

किनारा एक ख़ास जगह है।

वह अतीत का नहीं है।

वह भविष्य का नहीं है।

वह एक पतली रेखा है जहाँ निश्चितताएँ ख़त्म होती हैं और संभावनाएँ शुरू होती हैं।

इसीलिए यह डरावना है।

और इसीलिए यह अनमोल है।

मैंने अपने जीवन में बहुत से किनारे पार किए हैं।

कुछ पेशेवर।

कुछ निजी।

कुछ ऐसे जो मेरे सिवा किसी को दिखाई नहीं देते।

वह दिन जब मैंने एक सुरक्षा छोड़ी।

वह दिन जब मैंने पहले से बड़ी ज़िम्मेदारी स्वीकार की।

वह दिन जब एक बीमारी ने समय का अर्थ बदल दिया।

वह दिन जब एक क्षति ने प्रेम का अर्थ बदल दिया।

हर बार प्रक्रिया वही थी।

पहले डर।

फिर संदेह।

फिर क़दम।

आख़िर में खोज।

जैसे-जैसे साल बीते, मैंने सीखा कि लगभग सभी महत्वपूर्ण चीज़ें किनारे से परे जीती हैं।

प्रेम नियंत्रण के किनारे से परे जीता है।

भरोसा डर के किनारे से परे जीता है।

विकास आदत के किनारे से परे जीता है।

आज़ादी सुरक्षा के किनारे से परे जीती है।

और अर्थ अहं के किनारे से परे जीता है।

इसका मतलब यह नहीं कि किनारा आरामदेह है।

वह कभी नहीं होता।

कोई भी किसी आंतरिक सीमा को कुछ चुकाए बिना सचमुच पार नहीं करता।

मान्यताओं को पीछे छोड़ना पड़ता है।

आदतों को।

पहचानों को।

स्वयं के पुराने पड़ चुके रूपों को।

हर रूपांतरण एक अलगाव माँगता है।

और हर अलगाव एक तरह का दर्द पैदा करता है।

इसीलिए बहुत से लोग रुके रहना पसंद करते हैं।

इसलिए नहीं कि वे कमज़ोर हैं।

बल्कि इसलिए कि वे उसकी क़ीमत समझते हैं।

समस्या यह है कि रुके रहने की भी एक क़ीमत होती है।

एक कम दिखाई देने वाली क़ीमत।

पर वास्तविक।

छूटी हुई संभावना की क़ीमत।

न जिए गए जीवन की।

बिना जवाब के सवाल की।

कभी-कभी मैंने ख़ुद से पूछा है कि अगर मैंने ज़्यादा बार सावधानी चुनी होती तो क्या होता।

शायद मैंने कम ग़लतियाँ की होतीं।

मैंने कम दुख झेला होता।

मैंने कम जोखिम उठाए होते।

पर मैं एक अलग इंसान बन गया होता।

शायद ज़्यादा सुरक्षित।

निश्चित रूप से कम संपूर्ण।

क्योंकि हर बार जब हम कोई किनारा पार करते हैं, वास्तविकता का एक हिस्सा आख़िरकार हमें दिखाया जाता है।

पहले नहीं।

बाद में नहीं।

सिर्फ़ पार करते समय।

यही कारण है कि कोई किताब किसी अनुभव की जगह नहीं ले सकती।

कोई सलाह किसी चुनाव की जगह नहीं ले सकती।

कोई सिद्धांत जिए गए जीवन की जगह नहीं ले सकता।

हम तैयारी कर सकते हैं।

हम अध्ययन कर सकते हैं।

हम सुन सकते हैं।

पर पार करना हमेशा हमारे ही हिस्से आता है।

और यह पार करना एकाकी होता है।

लोग किनारे तक तुम्हारे साथ चल सकते हैं।

वे तुम्हारा हौसला बढ़ा सकते हैं।

वे तुम्हें सहारा दे सकते हैं।

वे तुमसे प्यार कर सकते हैं।

पर आख़िरी क़दम हमेशा उसी का होता है जो उसे उठाता है।

समय के साथ मैंने किनारे को बाधा के रूप में नहीं बल्कि एक निमंत्रण के रूप में देखना शुरू किया।

जो मैं पहले से जानता था, उससे बाहर निकलने का निमंत्रण।

ख़ुद को उससे परिभाषित करना बंद करने का जो मैंने किया था।

उसके लिए जगह छोड़ने का जो मैं अब भी बन सकता था।

इस जागरूकता ने भविष्य के साथ मेरा रिश्ता बदल दिया।

मैंने उसे एक मंज़िल मानना बंद कर दिया।

मैं उसे खोज का एक इलाक़ा मानने लगा।

मुझे उसे नियंत्रित नहीं करना था।

मुझे उसे पार करना था।

यह बहुत बड़ा फ़र्क़ है।

क्योंकि नियंत्रण तनाव पैदा करता है।

खोज जिज्ञासा पैदा करती है।

और जिज्ञासा साहस के सबसे सुरुचिपूर्ण रूपों में से एक है।

आज पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे सारे नतीजे याद नहीं।

मुझे सारे आँकड़े याद नहीं।

मुझे सारी जीतें याद नहीं।

इसके बजाय मुझे किनारे याद हैं।

वे क्षण जब मैं वापस मुड़ सकता था और नहीं मुड़ा।

वे क्षण जब मैं दरवाज़ा बंद कर सकता था और मैंने उसे खोला।

वे क्षण जब मैं सुरक्षा चुन सकता था और मैंने संभावना चुनी।

हमेशा सब ठीक नहीं हुआ।

कभी-कभी मैं ग़लत था।

कभी-कभी मैंने भारी क़ीमत चुकाई।

पर हर बार मैंने कुछ ऐसा सीखा जो मैं एक जगह ठहरे रहकर नहीं सीख सकता था।

और यही मायने रखता है।

जीवन के अंत में हमें सिर्फ़ इससे परिभाषित नहीं किया जाता कि हमने क्या बनाया है।

हमें उन सीमाओं से भी परिभाषित किया जाता है जिन्हें पार करने का साहस हमने किया।

क्योंकि हर इंसान के पास एक किनारा होता है।

एक अदृश्य रेखा, जिसके परे स्वयं का अगला रूप शुरू होता है।

ज़्यादातर लोग उसे दूर से देखते हैं।

कुछ पास आते हैं।

बहुत कम उसे पार करते हैं।

मैं नहीं जानता कि मैं बहादुर था या नहीं।

मैं बस इतना जानता हूँ कि हर बार जब जीवन मुझे किसी किनारे के सामने लाया, मैंने पीछे न हटने की कोशिश की।

क्योंकि वहीं दुनिया बड़ी हो जाती है।

वहीं इंसान ज़्यादा सच्चा हो जाता है।

वहीं कहानी जारी रहती है।

किनारे के परे।